ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र सितम्बर 2017 (द्वितीय)

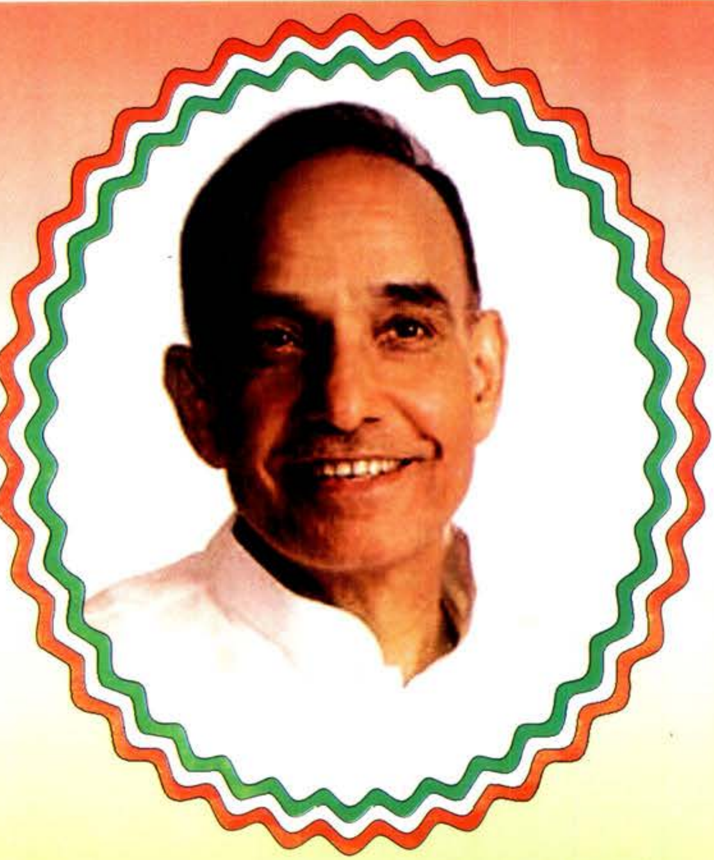

महर्षि दयानन्द के अनुयायी बागपत से सांसद डा० सत्यपाल सिंह (पुर्व कमिश्नर, मुम्बई पुलिस) के केन्द्र सरकार में मानव संसाधन, जल संसाधन तथा नदी विकास एवं गंगा संरक्षण राज्य मंत्री बनने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से हार्दिक बधाई।

Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit us : www.apsharyana.org

गांव सफींदो में वेद प्रचार अभियान को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

उपस्थित आर्यजन।

समाज एकता व गौ रक्षा सम्मेलन, समालखा

सम्मेलन में मंच पर उपस्थित अतिथिगण।

उपस्थित आर्य जन।

प्रैस को सम्बोधित करते हुए मुख्यातिथि आचार्य सर्वमित्र आर्य।

सम्मेलन में अपने विचार रखते हुए सम्मेलन के अध्यक्ष मा० रामपाल आर्य।

गांव बादली में वेद प्रचार अभियान में भजन प्रस्तुत करते हुए कुलदीप भास्कर व महेन्द्र आर्य।

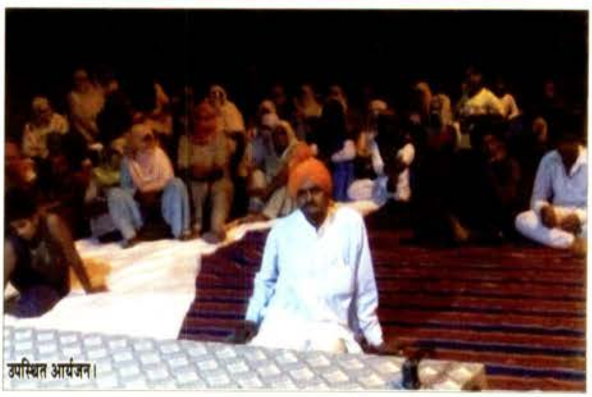
उपस्थित आर्यजन।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118
विक्रम संवत् 2074
दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 13 अंक 16

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

सितम्बर, 2017 (द्वितीय)
16 से 30 सितम्बर, 2017 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय— 2
क्या श्राद्ध आस्था की अभिव्यक्ति है ?
2. सत्यार्थप्रकाश क्यों पढ़ें ? 3
3. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी 4
4. प्राण-साधना 5
5. महान् व्यक्तित्व : डॉ. सत्यपाल सिंह आर्य 6
6. यूरोप यात्रा की एक झलक 7
7. वेदों में सार्वभौमिकता के सूत्र 8
8. पाखण्डों की निर्माणशाला—पुराण 10
9. हम आस्तिक हैं या नास्तिक : एक चिन्तन 11
10. स्वास्थ्य चर्चा— 12
गुर्दे की पथरी निकालने की अचूक दवा
11. जिला वेदप्रचार मण्डलों के अधिकारियों के पते 13
12. समाचार-प्रभाग 14

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

क्या श्राद्ध आस्था की अभिव्यक्ति है?

❑ उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

भारतवर्ष में भिन्न-भिन्न प्रकार के त्यौहार मनाए जाते हैं। प्रत्येक माह कोई न कोई त्यौहार आता रहता है जिस पर विशेष अनुष्ठान किया जाता है। इसी मास सुनने में आया कि श्राद्ध भी एक बहुत बड़ा धार्मिक कृत्य है। किन्तु पता चला कि मरे हुए माता-पिता, पितामह इत्यादि को भोजन कराने से सभी फल मिलते हैं, जो कि हमारे शास्त्रों के विपरीत हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द जी कहते हैं कि चौथा के बाद में कोई क्रिया शेष नहीं रहती। शास्त्रों के अनुसार आत्मा को कर्मों के अनुसार तुरन्त दूसरी योनि मिल जाती है। श्राद्ध करने वाले कहते हैं कि मैं अपने माता-पिता की गति कर रहा हूँ। क्या उनके माता-पिता की आत्मा इतने समय से गतिहीन है? और वे हर वर्ष इसकी गति करते हैं, जो मिथ्या भ्रान्ति है।

वास्तव में श्राद्ध और तर्पण क्या है? इस पर विचार करते हैं। श्राद्ध और तर्पण को पितृयज्ञ भी कहते हैं। सत्य को धारण करना श्रद्धा और श्रद्धा से माता-पिता, गुरुजनों की सेवा करना श्राद्ध कहलाता है। जिन कार्यों से माता-पिता, पितामह, प्रपितामह और गुरुजन पितर लोग प्रसन्न हों, उसे तर्पण कहते हैं। वे दोनों कार्य जीवित पितरों से ही संभव है। मृतक होने पर श्राद्ध तर्पण निष्प्रयोजन होने से त्याज्य हैं। महर्षि दयानन्द जी कहते हैं—

''जो देव अर्थात् विद्वान् ऋषि और पितर हैं, उन्हीं का श्राद्ध और तर्पण करना चाहिए।'' शतपथ ब्राह्मण में लिखा है—''जो वेद आदि शास्त्रों को जानते हैं, उन्हें देव कहते हैं। देव सदा सत्य आचरण करते हैं। सामान्य मनुष्य सत्य-असत्य दोनों बोलते हैं। देव परलोक अर्थात् भविष्य का भी चिन्तन करते हैं। देव कभी सोते नहीं अर्थात् कर्त्तव्य पथ पर जागरूक रहते हैं। इसी प्रकार ऋषि भी किसी विषय पर अनुसंधान करने वाले होते हैं। उनकी आकृति गंभीर और कर्म विशेषता लिए होते हैं। वे परमात्मा के पुत्र होते हैं, क्योंकि वे परमात्मा का ध्यान करते हैं।

यज्ञादि उत्तम कर्मों को बढ़ाने वाला सर्वहितकारी कार्यों में रथ के घोड़े के समान स्वयं आगे रहकर कार्य करने वाला बुद्धिमानों का मित्र उनके कष्टों का निवारण करने वाला ऋषि कहलाता है।'' **पितर-पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति।** जब लड़के के भी लड़का हो जाए तब उसकी पितर संज्ञा हो जाती है और वे ही अपने माता-पिता की सुरक्षा करते हैं। यजुर्वेद में कहा है—**ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितन्॥** अर्थात् पिता वा स्वामी अपने पुत्र, पौत्र, स्त्री, भृत्य आदि को सब दिन के लिए आज्ञा देकर कहे कि (मे पितन् तर्पयत्) मेरे पिता, पितामहादि, माता, दादी तथा आचार्य और इनमें भिन्न भी विद्वान् लोग अवस्था अथवा ज्ञान से वृद्ध मान्य करने योग्य हों उन सबको यथायोग्य सेवा से प्रसन्न किया करो। इस प्रकार माता-पिता की सेवा करना ही बहुत बड़ा यज्ञ है। माता-पिता के रहते हुए मनुष्य को कभी चिन्ता नहीं रहती, बुढ़ापा उसे अपनी ओर नहीं खींचता। माता भोजन, खान-पान और स्वास्थ्य का ध्यान रखती है। धन-धान्य की न्यूनता होने पर भी घर सुशोभित रहता है। सचमुच माता-पिता के समान दूसरी बया या आसरा नहीं है। माता के समान दूसरा सहारा नहीं है, कोई रक्षक नहीं है और कोई प्रिय नहीं है। पिता धर्म अर्थात् कर्त्तव्य का बोध कराने से पूज्य है। पिता ही स्वर्ग सुख विशेष का देने वाला है। पिता की सेवा करना सबसे बड़ा तप है। पिता के प्रसन्न होने पर सभी देवता प्रसन्न हो जाते हैं। पिता पुत्र से यदि कोई कठोर बातें कह देता है, वे आशीर्वाद बनकर फलित होती हैं। पिता यदि अभिनन्दन मधुर वचन और प्रशंसा करता है तो इससे पुत्र के पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है।

महाभारत में युधिष्ठिर भीष्म पितामह से पूछते हैं—''हे पितामह! धर्म का मार्ग बहुत बड़ा है, इसकी बहुत-सी शाखाएं हैं, इन धर्मों में से आप किसको विशेष रूप से आचरण में लाने योग्य समझते हो?'' भीष्म पितामह ने कहा—राजन्! मुझे तो माता-पिता तथा गुरुजनों की पूजा ही अधिक महत्त्वपूर्ण जान पड़ती है। जो उनकी आज्ञा के पालन में संलग्न है, उसके लिए दूसरे किसी धर्म के आचरण की आवश्यकता नहीं है। माता-पिता और गुरुजन ही तीनों लोक हैं। पिता की सेवा से इस लोक को, माता की सेवा

परलोक, तो गुरु की सेवा से ब्रह्मलोक भी लांघ सकते हैं। इन तीनों की आज्ञा का कभी उल्लंघन न करें। इनके भोजन कराने से पहले भोजन न करें। इन पर कोई दोषारोपण न करें और सदा इनकी सेवा में संलग्न रहें, यही सबसे उत्तम कर्म है। इनकी सेवा से तुम पवित्र कीर्ति, यश और उत्तम लोकों को प्राप्त कर लोगे।

गुरु का पद पिता से भी बढ़कर है, क्योंकि माता-पिता तो इस शरीर के जन्मदाता हैं, किन्तु आचार्य का उपदेश प्राप्त करके जो द्वितीय जन्म उपलब्ध होता है वह अजर, अमर और दिव्य है। विद्या ब्राह्मण के पास आई और बोली—''हे ब्राह्मण! मेरी रक्षा कर, मैं तेरे सुख का खजाना हूँ। तू निंदक, कुटिल तथा अजितेन्द्रिय विद्यार्थी को मेरा उपदेश मत करना।'' जो गुरु वेद ज्ञान देकर कानों को खोल देता है उस गुरु को शिष्य, पिता और माता समझो। किसी भी अवस्था में उसे द्रोह न करें। जो शिष्य पढ़-लिखकर विद्वान् होकर मन, वचन, कर्म से अपने गुरु का आदर नहीं करते वे गुरु की कृपा के पात्र नहीं बनते, उसी प्रकार वह शिक्षा भी उन शिष्यों का पालन नहीं करती।

महर्षि दयानन्द जी पंचमहायज्ञविधि में लिखते हैं— अब तीसरा पितृयज्ञ कहते हैं। इसके दो भेद हैं—एक तर्पण और दूसरा श्राद्ध। तर्पण उसे कहते हैं, जिस कर्म से विद्वान् रूप देव ऋषि और पितरों को सुखयुक्त किया जा सकता है। किसी विद्वान् साधु-सन्त के आने पर स्नेहयुक्त दृष्टि, मधुर वाणी से उसका स्वागत करें। उसके निकट बैठें और जाते समय कुछ दूर तक छोड़कर आएं। यजुर्वेद में कहा है—**पुनस्तु मा पितरः सोम्यासः पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यशनवै।** अर्थात् चन्द्रमा के समान शान्त पितर लोग सौ वर्ष की आयु से मुझे पवित्र करें। पितर लोगों को उचित है कि वे बच्चों को ब्रह्मचर्य, अच्छी शिक्षा और धर्म उपदेश से संयुक्त कर विद्या एवं उत्तम गुणों से युक्त करे। माता-पिता आदि अपनी सन्तानों में दीर्घायु व पराक्रम और सुविचारों को धारण कराएं तथा दुष्टों की संगति से बचाएं। हे पितर लोगो, हम आपके दक्षिण पार्श्व में घुटने मोड़कर आपका स्वागत करते हैं। आप हमारे इस सत्कार को ग्रहण कीजिए। पितर लोगों के दक्षिण में घुटने भूमि पर टिकाकर बैठना बताया है। यह क्रिया जीवित पितरों के संग हो सकती है, मृतकों के संग नहीं। इससे यह सिद्ध होता है कि जीवित माता-पिता, बुजुर्ग और गुरुजनों का नाम ही पितर है। उन्हें श्रद्धा से भोजन, वस्त्र तथा आवास देना तथा उनकी तृप्ति हेतु दूध, दही, फलों का रस, जल उपलब्ध कराना और मधुर वाणी से प्रीति कर वचन बोलना ही तर्पण कहलाता है। जो जन गुरुकुल से विद्या पढ़कर घर लौटते हैं, अपने माता-पिता की सेवा कर उन्हें फिर से युवा सदृश बना देते हैं, वे सुन्दर स्वरूप और ऐश्वर्यवान् हो हमारे ज्ञान-यज्ञ की रक्षा करते हैं और उनसे विद्या पढ़कर मैं विद्वान् बनूं। उपरोक्त समस्त उदाहरणों और श्रद्धा, तर्पण और श्राद्ध का गहन विवेचन करने के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि माता-पिता व गुरुजनों के मरने के उपरान्त किसी प्रकार की क्रिया करना पाखण्ड और अन्धविश्वास है। ऐसे व्यक्ति अपनी प्रसिद्धि चाहते हैं और जीवित माता-पिता का अपमान करते हैं तथा समाज में कुप्रथाएं स्थापित कर आने वाली पीढ़ी को भ्रम में डालते हैं। इसलिए मेरी सबसे प्रार्थना है कि सभी जीवित माता-पिता की सेवा करें और सदा आनन्द में रहें।

सत्यार्थप्रकाश क्यों पढ़ें?

ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए। सन्तानों को सुरक्षित करने के लिए। अन्धविश्वास और पाखण्डों को चुनौती देने के लिए। वैदिक धर्म की पुनः स्थापना के लिए। गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था की स्थापना के लिए। गृहस्थाश्रम के नियमों को समझने के लिए। आश्रम व्यवस्था को समझने के लिए। राजधर्म को जानने के लिए। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करने की उचित विधि को जानने के लिए। ईश्वर जीव और प्रकृति के भेद को समझने के लिए। बन्धन और मोक्ष विषय को जानने के लिए। धर्म के सत्य स्वरूप को जानने के लिए। भारतवर्ष में फैले मत-मतान्तरों में सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए। भारतीय संस्कृति को समझने के लिए। युवकों में बढ़ती हुई नास्तिकता को रोकने के लिए। धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति के लिए। विश्व में एक ही मानव धर्म को विस्तृत करने के लिए। वैचारिक क्रान्ति के लिए। सत्यार्थप्रकाश अवश्य पढ़ें।

-भलेराम आर्य, गांव साघी (रोहतक) 9416972879

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

नवम समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

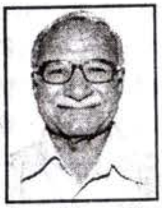

गतांक से आगे....

प्रश्न 702. कौन-कौन से स्थान माननीय (जिनका मान किया जाना चाहिए) हैं ?

उत्तर-1. धन, 2. बन्धु, कुटुम्ब, कुल, 3. अवस्था (आयु), 4. उत्तम कर्म, 5. श्रेष्ठ विद्या, ये पांच मान्य के स्थान हैं। परन्तु धन से उत्तम बन्धु, बन्धु से अधिक अवस्था, अवस्था से श्रेष्ठ कर्म, कर्म से पवित्र वाले विद्या वाले उत्तरोत्तर अधिक माननीय हैं।

प्रश्न 703. ज्ञानी और अज्ञानी किसे कहते हैं ?

उत्तर-चाहे कोई व्यक्ति सौ वर्ष का ही क्यों न हो परन्तु जो विद्या विज्ञान से रहित है, वह बालक (अज्ञानी) और जो विद्या विज्ञान का दाता है उस बालक को भी 'वृद्ध' मानना चाहिए, क्योंकि सब सत्य आप्त विद्वान् अज्ञानी को 'बालक' और ज्ञानी को 'पिता' कहते हैं।

प्रश्न 704. किस योग्यता से कोई व्यक्ति वृद्ध कहलाता है ?

उत्तर-ब्राह्मण ज्ञान से, क्षत्रिय बल से, वैश्य धन-धान्य से और शूद्र अधिक आयु से वृद्ध माना जाता है।

प्रश्न 705. जो व्यक्ति विद्या नहीं पढ़ा है, वह कैसा है ?

उत्तर-जैसे लकड़ी का हाथी, चमड़े का मृग होता है, वैसे अविद्वान् मनुष्य जगत् में नाममात्र का मनुष्य कहलाता है।

प्रश्न 706. कौन पुरुष धन्य है ?

उत्तर-जो सत्योपदेश से (उपदेश में वाणी मधुर और कोमल) धर्म की वृद्धि और अधर्म का नाश करते हैं, वे पुरुष धन्य हैं।

प्रश्न 707. आचार (आचरण) किसे कहते हैं।

उत्तर-मनुस्मृतिकार ने सत्यभाषणादि कर्मों के आचरण को आचार कहा है।

प्रश्न 708. किसकी सेवा करना 'देवपूजा' कहाती है ?

उत्तर-माता-पिता, आचार्य, अतिथि की सेवा करना 'देवपूजा' कहाती है। जिस-जिस कर्म से जगत् का उपकार हो, वह-वह कर्म करना और हानिकारक छोड़ देना ही मनुष्य का मुख्य कर्त्तव्य कर्म है।

प्रश्न 709. किस-किस का संग करें, किस-किस का न करें ?

उत्तर-आप्त जो सत्यवादी, धर्मात्मा, परोपकारप्रिय जन हैं, उनका सदा संग करे और कभी भी नास्तिक, लम्पट, विश्वासघाती, चोर, मिथ्यावादी, स्वार्थी, छली, कपटी आदि दुष्ट मनुष्यों का संग न करें।

प्रश्न 710. आर्यावर्त देशवासियों का आर्यावर्त देश से भिन्न देशों में जाने से आचार नष्ट हो जाता है वा नहीं ?

उत्तर-यह बात मिथ्या है, क्योंकि जो बाहर-भीतर की पवित्रता करनी, सत्यभाषण आदि आचरण करना है, वह जहां कहीं करेगा, आचार और धर्मभ्रष्ट कभी न होगा और जो आर्यावर्त में रहकर भी दुष्टाचरण करेगा, वही धर्मभ्रष्ट और आचार भ्रष्ट होगा।

प्रश्न 711. विदेश गमन से सदाचार नष्ट नहीं होता, इसके पक्ष में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने महाभारत और मनुस्मृति से कौन-से उदाहरण प्रस्तुत किये हैं ?

उत्तर-श्रीकृष्ण तथा अर्जुन पाताल में 'अश्वतरी' अर्थात् जिसको 'अग्नियान नौका' कहते हैं, उस पर बैठकर पाताल में जाकर महाराजा युधिष्ठिर के यज्ञ में उद्दालक ऋषि को ले आये थे। धृतराष्ट्र का विवाह 'गांधार' जिसको कंधार कहते हैं, वहां की राजपुत्री से हुआ। माद्री, पाण्डु की स्त्री 'ईरान' के राजा की कन्या थी और अर्जुन का विवाह पाताल में, जिसको 'अमेरिका' कहते हैं, वहां से राजा की लड़की उलोपी के साथ हुआ था। जो देशदेशान्तर, द्वीपद्वीपान्तर में न जाते होते तो ये सब बातें क्यों हो सकतीं ? मनुस्मृति में जो समुद्र में जाने वाली नौका पर 'कर' लेना लिखा है, वह भी आर्यावर्त से द्वीपान्तर में जाने के कारण है और जब राजा युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया था, उसमें सब भूगोल के राजाओं को बुलाने को निमन्त्रण देने के लिए भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव चारों दिशाओं में गये थे। जो दोष मानते होते तो कभी न जाते। सो प्रथम आर्यावर्तदेशीय लोग व्यापार, राजकार्य और भ्रमण के लिए सब भूगोल में घूमते थे और जो आजकल छूतछात और धर्म नष्ट होने की शंका है, वह केवल मूर्खों के बहकाने और अज्ञान बढ़ने से है।

क्रमशः अगले अंक में......

प्राण-साधना

❑ महात्मा चैतन्यमुनि, महादेव, सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि०प्र०)

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे। यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम्। (अथर्व० 11.4.1) मन्त्र में प्राण की श्रेष्ठता के बारे में कहा गया है कि उस प्राण को सबका नमन है, जिसके वश में यह सब कुछ है। जो समस्त प्राणियों का ईश्वर है और जिसमें यह सब प्रतिष्ठित हैं। तैत्ति०उप० का ऋषि कहता है—**प्राणं देवा अनुप्राणन्ति मनुष्याः पशवश्च ये। प्राणो हि भूतानामायुस्तस्मात्सर्वायुषमुच्यते। सर्वमेव त आयुर्यन्ति ये प्राणं ब्रह्मोपासते। प्राणो हि भूतानामायुस्तस्मात्सर्वायुषमुच्यते।** (ब्र० 3.1,2) अर्थात् जो देव, मनुष्य और पशु हैं, वे प्राणों के आधार पर ही जीवन धारण करते हैं। प्राण ही प्राणियों की आयु है, अतः प्राण ही सम्पूर्ण आयु कहा गया है। जो प्राण रूपी ब्रह्म की साधना करते हैं वे सम्पूर्ण आयु को प्राप्त होते हैं। प्राण ही प्राणियों की आयु है, अतः प्राण ही सम्पूर्ण आयु कहा गया है। प्राण की श्रेष्ठता दिखाने के लिए बृहदारण्यक उपनिषद् में एक प्रसंग आया है कि जब देवों और असुरों का संघर्ष हुआ है तो असुरों पर विजय प्राप्त करने के लिए देवों ने उद्‌गीथ की साधना की। उन्होंने पहले वाणी से फिर घ्राण, चक्षु, श्रोत्र तथा मन से साधना की मगर सभी जगह असुरों ने पाप से बीन्ध दिया। अन्ततः देवों ने प्राणों में उद्‌गीथ की साधना की तथा असुर उन्हें पराभूत नहीं कर सके, बल्कि जब वे प्राण को पाप से बिन्धने के लिए गए तो स्वयं ही इस प्रकार से चूर-चूर हो गये। जैसे किसी पत्थर से टकराकर मिट्टी का ढेला चूर-चूर हो जाता है। इसी उपनिषद् में इन्द्रियों के विवाद के प्रसंग द्वारा प्राण की श्रेष्ठता दर्शायी गई है। प्रश्नोपनिषद् में रयि से प्राण को श्रेष्ठ तथा अमृतरूप बताया गया है।

प्राण की शक्ति बढ़ाने और उसे अनुशासित करने की विधि को प्राणायाम कहते हैं। प्राणायाम ही प्राणसाधना का मूलाधार है। इस प्राणायाम द्वारा ही हम प्राणमय कोष की सिद्धि करके साधना के पथ पर द्रुत गति से आगे बढ़ सकते हैं। महर्षि पतञ्जलि जी ने आसन के बाद प्राणायाम को स्थान दिया है। यह तकनीक भारतीय मनीषियों की एक विशेष देन है। प्राणायाम की सिद्धि के बाद व्यक्ति की इन्द्रियां स्वतः ही अन्तर्मुखी हो जाती है। यही नहीं इससे अपार शारीरिक शक्ति भी प्राप्त होती है। इससे शरीर में शुद्ध रक्त का संचरण होता है। प्राणायाम का अभ्यास न करने से हमारे फेफड़ों का बहुत-सा हिस्सा रोगग्रस्त हो जाता है तथा इसके विपरीत प्राणायाम करने से फेफड़ों की सक्रियता बढ़ती है। प्राणायाम से व्यक्ति के भीतर शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बल का तथा साहस, शक्ति और उत्साह का संचार होता है। इसके भीतर दुःखों को सहन करने की अपार शक्ति प्राप्त हो जाती है। इससे मानसिक सूक्ष्मता मिलती है तथा विद्यार्थी इसके अभ्यास से अपनी स्मरण शक्ति बढ़ा सकते हैं। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द जी कहते हैं—"ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मवित् संन्यासी को उचित है कि ओंकार पूर्वक सप्त व्याहृतियों से विधिवत् प्राणायाम जितनी शक्ति हो उतना करे परन्तु तीन से न्यून प्राणायाम कभी न करे, यही संन्यासी का परम तप है।" ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वे लिखते हैं—"इस प्रकार प्राणायाम पूर्वक उपासना करने से आत्मा के ज्ञान का ढांकने वाला आवरण जो अज्ञान है वह नित्यप्रति नष्ट होता जाता है और ज्ञान का प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ता जाता है।"

मनु महाराज कहते हैं कि जैसे अग्नि में तपाने और गलाने से धातुओं के मल नष्ट हो जाते हैं वैसे ही प्राणों के निग्रह से मन आदि इन्द्रियों के दोष भस्मीभूत हो जाते हैं। इसी सम्बन्ध में उनका कथन है कि ब्रह्मवित् व्यक्ति या संन्यासी के द्वारा जो विधि के अनुसार प्रणव अर्थात् ओंकार पूर्वक और भूः भुवः स्वः आदि सप्त व्याहृतियों के जप सहित तीनों प्रकार के बाह्य, अभ्यान्तर, स्तम्भक प्राणायाम अथवा न्यून से न्यून तीन प्राणायाम किये जाते हैं, वह उनका परम तप होता है। योगदर्शन में लिखा है—ततः क्षीयते प्रकाशावरणम् (2.52) अर्थात् प्राणायाम के अभ्यास से आत्मा के ज्ञान को ढकने वाला अज्ञानता रूपी आवरण नष्ट हो जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस सम्बन्ध में लिखते हैं—"जैसे अत्यन्त वेग से वमन होकर अन्न जल बाहर निकल जाता है वैसे प्राण को बल से बाहर फेंक के बाहर ही यथाशक्ति रोक देवें। जब बाहर निकालना चाहें तब मूलेन्द्रियों को ऊपर खींच के वायु को बाहर फेंक दें। जब तक मूलेन्द्रिय को ऊपर खींच रखें, तब तक प्राण बाहर रहता है। इसी प्रकार प्राण अधिक बाहर ठहर सकता है। जब घबराहट हो तब धीरे-धीरे भीतर वायु को लेके फिर भी वैसे ही करता जाए, जितना सामर्थ्य और इच्छा हो और मन में (ओम्) इसका जप करता जाए। इस प्रकार करने से आत्मा की पवित्रता और मन की पवित्रता और स्थिरता होती है। एक 'बाह्य विषय' अर्थात् बाहर ही अधिक रोकना। दूसरा 'आभ्यान्तर' अर्थात् जितना

प्राण रोका जाए उतना रोक के, तीसरा 'स्तम्भवृत्ति' अर्थात् एक ही बार जहाँ का तहाँ प्राण को यथाशक्ति रोक देना। चौथा 'बाह्याभ्यान्तरापेक्षी' अर्थात् जब प्राण भीतर से बाहर निकलने लगे तब उससे विरुद्ध न निकलने देने के लिए बाहर से भीतर लें और जब बाहर से भीतर आने लगे, तब भीतर से बाहर की ओर प्राण को धक्का देकर रोका जाए। ऐसे एक-दूसरे के विरुद्ध किया करें तो दोनों की गति रुक कर प्राण अपने वश में होने से मन और इन्द्रियां भी स्वाधीन होते हैं। बल पुरुषार्थ बढ़कर बुद्धि तीव्र सूक्ष्मरूप हो जाती है कि जो बहुत कठिन और स्वच्छ विषय को भी शीघ्र ग्रहण करती है। इससे मनुष्य शरीर में वीर्य वृद्धि को प्राप्त होकर स्थिर, बल, पराक्रम, जितेन्द्रियता, सब शास्त्रों को थोड़े ही काल में समझकर उपस्थित कर लेगा (तीसरा समुल्लास)। इस प्रकार प्राणायाम आत्मा, मन तथा शरीर की स्वस्थता एवं सबलता प्राप्त करने के लिए एक अत्यधिक उपयोगी प्रक्रिया है। प्राणायाम के बारे में जहां कुछ लोगों ने अनेक प्रकार की भ्रन्तियां फैला रखी हैं, वहीं दूसरी ओर ऐसे भी लोग हैं, जो प्राणायाम के नाम पर अपनी दुकानदारी को चमकाने में लगे हुए हैं, जिसके कारण जनसामान्य यह प्रक्रिया बहुत दूर होती चली जा रही है। हमें एक परिचित से पता चला कि जब उन्होंने किसी महात्मा से प्राणायाम सिखाने का आग्रह किया तो उन्होंने कहा कि अगले जन्म में जब ब्रह्मचारी बनोगे तब ही आपको प्राणायाम सिखाया जा सकता है। यह गृहस्थियों को नहीं सिखाया जाता है। इसी प्रकार कुछ लोग स्त्रियों को प्राणायाम से दूर रखते हैं। वास्तव में प्राणायाम स्त्री-पुरुष सभी को करना चाहिए। हां, इतना ध्यान रखना चाहिए कि प्राणायाम की विधि सुपात्र एवं योग्य व्यक्ति से ही सीखनी चाहिए। इसके लिए दो विशेष सावधानियों का भी ध्यान रखना चाहिए। पहली यह कि प्राणायाम सदा खाली पेट ही करना चाहिए, दूसरा ऐसे स्थान पर करना चाहिए जहाँ धूल और धुआं आदि न हो। प्राण साधना की उपलब्धि वेद में इस प्रकार बतलाई गई है—**अश्विना भेषजं मधु भेषजं न सरस्वतीः। इन्द्रे त्वष्टा यशः श्रियंरूपंरूपमधु सुते॥** (यजु० 20.64) **(अश्विना)** ये प्राण-अपान हमारे शरीर में सोम को व्याप्त करते हैं, **(मधु भेषजं)** यह बहुत कल्याणकारी औषधि है। **(सरस्वतीः)** जब प्राण-अपान शारीरिक रोगों के लिए औषधि बनते हैं तो ज्ञान भी हमारे लिए उत्तम औषधि बनता है फिर **(इन्द्रे)** वह प्रभु (या इन्द्र अर्थात् आत्मा) **(यशः)** यश को स्थापित करते हैं, हम यशस्वी बनते हैं, **(श्रियं)** शोभा को प्राप्त होते हैं और **(रूपसम्पन्नः)** रूप-सम्पन्न हो जाते हैं।

महान् व्यक्तित्व : डॉ. सत्यपाल सिंह आर्य

डॉ. सत्यपाल सिंह जी का जन्म पश्चिमी उत्तर-प्रदेश के गांव बासौली में 29 नवम्बर 1955 में हुआ। इनके पिता श्री रामकिशन आर्यसमाज के विचारों से ओतप्रोत थे तथा माता श्रीमती हुकमवती देवी धार्मिक महिला थीं। सत्यपाल सिंह जी बचपन से ही एक होनहार विद्यार्थी रहे। तीव्र बुद्धि व प्रभावकारी स्मरणशक्ति के कारण वे अपनी कक्षा में प्रथम स्थान लेते रहे।

गांव बासौली पाठशाला से 5वीं पड़ोस के गांव बरवाला इण्टर कालेज, किशनपुरा बराला में पढ़े। बी.एस.सी., एम.एस.सी. जनता जाट कालेज बड़ौत तथा एम.एस.सी. (रसायन शास्त्र) द्वितीय वर्ष जैन कालेज बड़ौत से किया। बाद में सी.आई.आर व विश्वविद्यालय आयोग की छात्रवृत्ति लेकर दिल्ली विश्वविद्यालय से रसायन शास्त्र में एम.फिल् करने के बाद उसी विषय में पी-एच.डी. करने लगे।

श्री सत्यपाल सिंह जी का विवाह एक शिक्षित एम.एस.सी., बी.एड. आर्य विचारों की महिला अलका आर्या से हुआ। पिता रामकिशन की मृत्यु के बाद उनकी याद में गांव बासौली में छोटे बच्चों में अच्छे संस्कार डालने के लिए **'श्री रामकिशन संस्कार अकादमी'** आरम्भ की। उनका पुलिस का कैरियर एक प्रतिभा, साहस, प्रतिष्ठा व लोकप्रियता का रहा जिस कारण सत्यपाल सिंह जी को लगभग एक दर्जन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

श्री सत्यपाल सिंह ने 20 देशों की यात्रा की तथा उन यात्राओं के अनुभव का अपने प्रशासनिक कार्य में लाभ उठाया, क्योंकि स्वयं सत्यपाल सिंह आर्यसमाजी होने पर गर्व करते हैं। इसलिए देश के हर आर्य को उनके केन्द्र में मंत्री बनने पर प्रसन्नता है।

—मा० रामपाल आर्य, प्रधान

यूरोप यात्रा की एक झलक

—डॉ० जगदेव विद्यालंकार (सेवानिवृत्त प्राचार्य) 667-ए/29 तिलक नगर, रोहतक

गतांक से आगे....

दोपहर के समय स्विटजरलैंड के विशेष आकर्षण 'टिटलिस' नामक पहाड़ी पर गए। इसकी ऊँचाई दस हजार फुट है। केवल कार के द्वारा इसकी चोटी पर जाने की व्यवस्था है। वहां का तापमान दो डिग्री का था। वहां यात्रियों ने हिमपात और बर्फ पर चलने का आनन्द लिया। 20.8.17 को जूरिक हवाई अड्डे से उड़कर 21.8.17 को प्रात:काल दिल्ली पहुंच गए। दस दिवसीय भ्रमण में यूरोप का जो दिग्दर्शन किया, उसमें दो प्रकार का अनुभव हुआ। कुछ बातें अनुकरणीय और कुछ त्याज्य प्रतीत हुईं।

स्वच्छता वहां का विशेष अनुकरणीय बिन्दु है। पूरे यूरोप में सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है। कहीं पर भी कुछ भी अशोभनीय एवं अवाञ्छनीय दृष्टिगत नहीं होता। सड़क पर कहीं भी एक तोला रेत या मिट्टी नहीं मिली, कहीं कोई कागज का टुकड़ा दिखाई नहीं दिया। फ्रांस और इंग्लैंड की जमीन उच्चावय टीलेदार हैं, पर टीले भी पूर्णरूप से हरेभरे हैं। हालैण्ड की जमीन समतल है। जर्मनी और स्विटजरलैंड में पहाड़ियां हैं। पेड़ों की सघनता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती थी। सारे खेत लॉन की तरह प्रतीत होते थे। मशीनों से घास कटी हुई होती है। खेतों की घास वे सुन्दरता के लिए नहीं काटते अपितु घास भी उनकी एक फसल है। सूखी घास के गट्ठे बनाकर जमा कर लेते हैं जो पशुओं के चारे के लिए काम आते हैं। गाय सभी जगह दिखाई देती थी, भैंस वहां कहीं दिखाई नहीं दी। सूरजमुखी, मकई की खेती पर्याप्त दिखाई दी। वट, पीपल, नीम, शीशम आदि पेड़ कहीं दिखाई नहीं दिए, आम, अमरूद, सेब, सन्तरा, केला आदि फलदार पेड़ में दिखाई नहीं दिए तथापि पेड़ों की प्रचुरता और हरितिमा अवश्य मोहक थी।

अनुशासन और नियम पालन वहां के लोगों का विशेष गुण है। वहां का यातायात भी अत्यन्त अनुशासित और उन्नत है। साइकिल चलाने में वहां के युवक और युवतियां अपनी बेइज्जती नहीं समझते। हालैंड की राजधानी एमस्टर्डम में तो साइकिल चलाने का विशेष शौक है। अकेले नगर में डेढ़ लाख साइकिल हैं। हार्न बजाने पर पूरे यूरोप में प्रतिबन्ध है। ध्वनिप्रदूषण एवं वायुप्रदूषण नाममात्र है। आजकल वहां का मौसम सुहावना है, न सर्दी है, न गर्मी है, दिन में सर्दी नहीं है, सुबह-शाम हल्की सर्दी होती है। सूर्यास्त सायंकाल 8.30 बजे और सूर्योदय 6 बजे होता है, दिन साढ़े चौदह घण्टे और रात साढ़े नौ घण्टे की हैं। आजकल इंग्लैंड का समय भारतवर्ष से साढ़े चार घण्टे पीछे और शेष यूरोप का समय साढ़े तीन घण्टे पीछे है।

यूरोप में अनेक देश भौतिक दृष्टि से उन्नत एवं समृद्ध हैं, वे विकसित राष्ट्रों की शृंखला में गिने जाते हैं। अपराध वहां बहुत कम होते हैं। भिखारी प्राय: नहीं हैं। पैरिस में दो स्थानों पर एक-एक भिखारी दिखाई दिए। फिर भी हमारी पर्यटन-प्रबन्धिका जेबकतरों से सावधान रहने के लिए प्रतिदिन हमें अवश्य कहती थीं। 18.8.17 को हम जूरिक (स्विटजरलैंड) में लिमान्थ नदी के किनारे एक बैंच पर बैठे थे तभी अनायास ही एक व्यक्ति ने हमें हरियाणवी अभिनन्दन किया। बात करने पर पता चला कि वह फतेहाबाद का रहने वाला है। पिछले 20 वर्ष में जूरिक में अपना व्यापार कर रहा है और नाम श्री सतपालगिरि है। वह एक घण्टा हमारे साथ रहा, उसने बताया यूरोप में दाम्पत्य जीवन परिष्कृत नहीं है। वहां दस-पन्द्रह प्रतिशत लोग ऐसे हैं जिनका जीवन में कभी तलाक नहीं हुआ, अन्यथा 80-85 प्रतिशत लोगों का जीवन में एक बार से लेकर पांच-सात बार तक भी तलाक होते रहते हैं। वहां माता-पिता अपनी संतान को वैवाहिक बन्धन में बांधना अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते। 17-18 वर्ष की आयु में भी वहां युवक-युवतियां आत्मनिर्भर हो जाते हैं और वे माता-पिता से अलग रहना प्रारम्भ कर देते हैं और स्वेच्छा से ही अपना पति-पत्नी चुन लेते हैं। चाहें तो चर्च में अपना विवाह पंजीकृत करा लेते हैं। जब चाहें तलाक ले लेते हैं। लड़की लड़के से अदालत के माध्यम से खर्च लेती रहती है।

हमारी संस्कृति में पढ़ाया जाता है—

आहारनिद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेष: धर्मेण हीन: पशुभिर्समान: ॥

क्रमश: पृष्ठ 9 पर......

वेदों में सार्वभौमिकता के सूत्र

❑ इन्द्रजित्देव, चूना भट्ठियां, सिटी सेंटर के निकट, यमुनानगर 09466123677

लगभग 2 अरब वर्ष जब यह सृष्टि बनी थी, तब अनेक देश या अनेक राष्ट्र व अनेक जातियाँ न थीं। पूरी धरती एक ही राष्ट्र थी। परस्पर मतभेदों, स्वार्थों व अज्ञान मूलक मान्यताओं के कारण समयान्तर से धीरे-धीरे धरती का बंटवारा होता गया व अब देशों की संख्या 200 से भी अधिक हो चुकी है। सबके संविधान अलग-अलग हैं, सबके स्वार्थ पृथक्-पृथक् हैं व सबकी मान्यताएँ भी परस्पर विरोधी बनी हैं। जन्म से मनुष्य जाति एक ही है, परन्तु सम्प्रदायों व मजहबों ने मानसिक विभाजन की रेखाएं खींच दी हैं। मनुष्यों के शरीरों की रचना व उनका संचालन पूरी दुनिया में एक-सा ही है। एक समान गर्भ स्थापित होता है तथा एक जैसा ही सब मनुष्यों के शरीरों का विकास गर्भ में होता है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा सभी प्राणियों का पिता होने से अपने ग्रन्थ में पक्षपात व भेदभाव पूर्ण उपदेश ईश्वर द्वारा देने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। वेदों में प्राणिमात्र को मित्र की देखने का उपदेश मिलता है। यजुर्वेद के 36वें अध्याय के आठवें मंत्र में कहा है—'**मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे**' अर्थात् हम सब एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। वैदिक दृष्टिकोण विशाल व विस्तृत है। इसके अनुसार सारा संसार एक घोंसला है तथा उसमें रहने वाले सब प्राणियों के सुख-शान्ति की कामना की जाती है—'**यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।**' यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के सातवें मन्त्र में कहा है—'**यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मन्नेवानुपश्यति।**' अर्थात् प्राणिमात्र की आत्मा को अपने समान समझना एवं अपने को सबके समान समझना। यह आत्मवत् दृष्टि न केवल मनुष्य जाति के प्रति होनी चाहिए अपितु पशु-पक्षी आदि सभी प्राणियों के प्रति भी होनी चाहिए। अथर्ववेद के इस मन्त्र में भाई-बहन तथा अन्य सब लोगों को नियमपूर्वक मेल से रहकर समभाव व परस्पर प्रेम रखने का उपदेश है—

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया॥ (अ० 3.30.3)

जातिभेद मन में न लाकर हमें घर में आए विद्वान् अतिथि को भोजन कराने का उपदेश भी अथर्ववेद (9.6.7) के इस मंत्र में उपलब्ध होता है—

एष वा अतिथिर्यच्छ्रोत्रियस्तस्मात् पर्वो नाशनीयात्।

जिस प्रकार सूर्य तथा चन्द्रमा सब प्राणिमात्र के कल्याण की भावना से निरन्तर कार्यरत रहते हैं, उसी प्रकार हम भी समाज के कल्याण मार्ग पर चलते रहें। उस मार्ग पर चलने के लिए हम निरन्तर दानशीलता, हिंसारहित भावना व ज्ञानी व्यक्तियों का संसर्ग प्राप्त करते रहें, यह उपदेश हमें ऋग्वेद के पांचवें मण्डल के इस मंत्र में मिलता है—

स्वस्थि पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि॥ (ऋ० 5.51.15)

मनुष्य मनुष्य का परस्पर ऐसा प्रेम-स्नेह का व्यवहार हो, जैसे गाय का नवजात बछड़े के प्रति होता है। सारे संसार में सुख और शान्ति के लिए एक मन वाले होकर सब मनुष्यों को साथ-साथ चलने व बोलने की शिक्षा अथर्ववेद के इस मंत्र में वर्णित है—

सहृदयं सांमनस्यम्। (अ० 3.30.1)

इस समानता के लिए आवश्यक है कि मनुष्य अकेला न खाए। बांटकर खाने का आदर्श ऋग्वेद के दसवें मंडल के इस मंत्र में आपको मिल जाएगा—

केवलाघो भवति केवलादी।

अथर्ववेद में यह उपदेश भी आपको मिल जाएगा कि जिसमें कहा गया है कि सैकड़ों साधनों से कमाए धन व पदार्थादि को हजारों व्यक्तियों में वितरित कर दिया करो—

शतहस्त समाहार सहस्त्रहस्त सं किर। (अ० 3.24.5)

पृथ्वी सब प्रकार के विचारों वाले, कर्त्तव्यों का पालन करने वाले तथा विभिन्न भाषाएं बोलने वाले सभी लोगों का एक घर है, यह शिक्षा अथर्ववेद में इस प्रकार मिलती है—

जन बिभ्रती बहुधा विवाचसं नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्। (अ० 12.1.45)

ऐसे व्यक्ति के लिए सारा संसार एक इकाई बन जाता है तथा सभी भाषागत रंग जाति व सम्प्रदाय आदि भेदभाव से रहित हो जाता है। यही **वसुधैव कुटुम्बकम्** की भावना है। संसार के किसी भी देश का व्यक्ति हो, प्रदेश या

सम्प्रदाय का हो, उसकी रक्षा करना मनुष्यमात्र का कर्त्तव्य है, ऐसा ऋग्वेद में कहा है—

पुमान् प्रमांसं परिपातु विश्वतः। (ऋ० 6.75.14)

यजुर्वेद के अड़तीसवें अध्याय में यह बड़ा श्रेष्ठ उपदेश दिया गया है कि केवल अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहकर मनुष्यों को चाहिए कि वे सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझें—

धर्मेतत्ते पुरीषं तेन वर्धस्व चा चप्यायस्व।
वर्धिषीमहि च वयमा च प्यासिषीमहि॥ (यजु० 38.21)

अर्थात् जैसे सर्वत्र अभिव्याप्त ईश्वर ने सबकी रक्षा तथा पुष्टि की है, वैसे ही हमें चाहिए कि वैसे ही दूसरों को निरन्तर पुष्ट करते रहें व उन्हें हम बढ़ाते रहें।

सभी परिवारों, देशों, प्रचलित जातियों व राष्ट्रों में परस्पर द्वेष व घृणा की स्थापना आज हमें देखने को मिलती हैं। ऐसी स्थिति से बचने के लिए हमें ऋग्वेद (10.191.2) के इन अन्तिम मंत्रों की सार्वभौमिक व सार्वकालिक शिक्षा मिलती है—

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

अर्थात् हम सबको इकट्ठे रहकर प्रेमपूर्वक रहना चाहिए। हमारे विचार ज्ञानियों जैसे होने चाहिएं व हमारी बोली भी एक होने चाहिएं—

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥

(ऋ० 10.191.4)

अर्थात् मनुष्य जाति के संकल्प एक जैसे तथा परस्पर अविरोधी होने चाहिएं। हमारे मन एक-दूसरे के अनुकूल हों ताकि सुख-सम्पत्ति में वृद्धि होवे।

सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय, सामाजिक व पारिवारिक सौमनस्य व सामञ्जस्य की स्थापना करना ही समानता है। समानता में सुख है, शान्ति है तथा सब का कल्याण है। वेदों में व्यापक दृष्टि से सम्पूर्ण मनुष्य जाति के विषय में चिन्तन उपलब्ध है। इस चिन्तन व इस सोच के अनुसार आचरण करके ही मनुष्य इस पृथिवी में सुख व शान्ति को सुप्रतिष्ठित कर सकता है। इन नियमों के पालन से हम इतने उदार बन जाएं कि क्षुद्र सीमाओं में न बंधकर विशाल पृथिवी को अपना निवास स्थान समझें। वेद सम्पूर्ण संसार के मानवों को श्रेष्ठ समाज के निर्माण की प्रेरणा देते हैं। इनके पालन करने से ही साम्प्रदायिकता की संकीर्ण भावनाओं से मनुष्य मुक्त हो सकेगा। वैदिक सामाजिक मान्यताएं उदात्ततम भावनाओं को प्रेरणा देने वाली हैं। इनमें सर्वत्र सत्कर्मों व सद्गुणों का अद्भुत समावेश है। भारत को यदि अपनी प्रतिष्ठित छवि को बचाकर रखना है तो वैदिक सिद्धान्त ही सहायक होंगे। विश्व को परस्पर घृणा व द्वेष से बचाकर एवं वैदिक आदर्शों का अनुसरण करके ही राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संतुलन स्थापित हो पाएगा। यही वेदों का ग्रहण करने योग्य मूल उज्ज्वल सन्देश है।

यूरोप यात्रा की एक..... पृष्ठ 7 का शेष.....

आहार, निद्रा, भय और मैथुन तक तो मनुष्य पशु के ही समान होता है। पशुता से ऊपर उठने के लिए मनुष्य को धर्म का आश्रय लेना ही पड़ता है, तभी मनुष्य का सामाजिक और सांस्कृतिक विकास संभव है। बार-बार तलाक लेने वाले व्यक्ति रिश्तों की पवित्रता, परिपक्वता, स्थायित्व के महत्त्व को नहीं समझ सकते। रिश्तों की पवित्रता में ही मनुष्य में संवेदनशीलता, सहनशीलता, सहानुभूति, सहृदयता, सौजन्य, स्नेह, सद्भाव एवं वात्सल्य आदि मानवीय गुणों का विकास होता है। आचार और व्यवहार की उच्चता पारस्परिक त्याग और परमार्थ के भाव से ही सम्भव है। यही कारण है कि भौतिकता की अतिशयता से ऊबकर किञ्चित् पाश्चात्य लोग, आध्यात्मिकता की खोज में भारत की ओर आते हैं। भौतिक उन्नति के साथ-साथ मनुष्य को आध्यात्मिकता की भी आवश्यकता होती है। आध्यात्मिकता केवल योगियों के लिए ही नहीं अपितु सांसारिक लोगों के लिए भी उपादेय है। दुर्भाग्य से पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भारतीय युवक-युवतियों पर भी पड़ने लगा है और इसलिए यहाँ भी तलाक का सिलसिला आरम्भ हो गया है। अनुकरण करना है तो वहां के स्वच्छता, अनुशासन, नियमपालन आदि नैतिक गुणों का करें, अन्धानुकरण न करें।

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)	6 से 8 अक्तू० 2017
2.	आर्यसमाज तिलक नगर (रोहतक)	14 से 15 अक्तू० 2017
3.	गुरुकुल लाढौत (रोहतक)	15 अक्तू० 2017
4.	आर्यसमाज बसई (गुरुग्राम)	27 से 29 अक्तू० 2017
5.	आर्यसमाज सैक्टर-3, फरीदाबाद	2 से 4 नव० 2017
6.	आर्यसमाज धनौंदा (महेन्द्रगढ़) (वेद पारायण यज्ञ)	1 से 3 दिस० 2017

—रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

पाखण्डों की निर्माण शाला—पुराण

❑ डॉ० बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा (उ.प्र.)

आए दिन नए-नए पाखण्डी गुरुओं के चेहरे जनता के सामने आ रहे हैं। वास्तविकता यह है कि इनका निर्माण उन पुराणों से ही हो रहा है जिनकी आलोचना सत्यार्थप्रकाश व अन्य आर्य साहित्यों में की गई है।

आशाराम बापू श्रीकृष्ण व उनके साथ गोपियों व राधा की रासलीला का वर्णन करते नहीं थकते थे। होली पर वह विशेष प्रकार की होली अपने शिष्य-शिष्याओं व सहस्रों की भीड़ के साथ खेलते थे। सभी ने टीवी पर सीधा प्रसारण देखा। उपदेश में भी गोपियाँ जब यमुना में नग्नावस्था में स्नान कर रही थीं तब कृष्ण ने यमुना के किनारे से वस्त्र चुरा लिए वह वस्त्रों को लेकर कदम्ब के वृक्ष पर बैठ गए। जब गोपियों ने स्नान कर यमुना के किनारे पर देखा तो वस्त्र नहीं मिले उन्हें पेड़ पर कृष्ण दिखाई दिया। तब अपने वस्त्र मांगे तो कृष्ण ने कहा पानी से बाहर आओ तब वस्त्र दूँगा। ऐसे उपदेश और उन पर ही आचरण किया।

इस प्रकार गोपियों को जल से बाहर आने पर विवश किया। ब्रह्मवैवर्तपुराण में ऐसा दिया है। इस प्रकरण को सरिता मुक्ता में भी प्रकाशित किया गया था कि क्या यह भगवान का कार्य है? महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुराणों में ऐसे अनेक कथानक व पाखण्ड पूर्ण प्रक्षिप्त विषयों को जनता के सामने रखा परन्तु यह हिन्दू जाति अपने भगवान् व महान् आत्माओं पर कोई भी कीचड़ उछालता है तो बड़ी प्रसन्न होती है। भागवत कथा होती है तो कृष्ण को बताते हैं कि मनिहार बन चूड़ी पहनाने जाता है। कुब्जा के साथ संसर्ग करता है। कहीं गगरी-मटकी फोड़ता है, तो कहीं दधि की चोरी करता है, ऐसा भागवत वाले सुनाते रहते हैं और जनता से 'श्री कृष्णचन्द्र की जय' का नारा भी लगवाते रहते हैं। इन्होंने कृष्ण का चरित्र इतना बुरा बनाकर रख दिया जिसे पढ़कर भी लज्जा आती है। परन्तु पौराणिक भाई इस पर भी लीपा-पोती करते हैं, कहते हैं कि श्रीकृष्ण वस्त्रों को इसलिए चोरी करके ले गये थे क्योंकि वह जल जो वरुण देवता का निवास है, वहाँ नग्न होकर नहीं नहाना चाहिए। इसलिए कृष्ण ने यह लीला की थी, किन्तु लीपापोती करते समय यह भी सोचना चाहिए कि वस्त्र पहनें भी होतीं तो क्या पानी वस्त्रों के अन्दर नहीं जाता।

ऐसी एक नहीं कितनी ही लीलाएँ पुराणों में भरी पड़ी हैं। महर्षि लिखते हैं कि श्रीकृष्ण का चरित्र तो इतना महान् है कि ऐसा महात्मा पुरुष तो ढूंढ़ने पर भी नहीं मिल सकता। श्रीकृष्ण महाविद्वान्, चरित्रवान्, ज्ञानवान् पुरुष थे। जीवन में परस्त्री अर्थात् रुक्मिणी को छोड़ किसी अन्य स्त्री की ओर नहीं देखा। उनके चरित्र पर जो कीचड़ उछाली गई है, वह उनके जीवन से अन्याय किया गया है। उनका चरित्र उच्चकोटि का था। ऐसे ही आशाराम बापू का सुपुत्र नारायण भी आश्रम की कन्याओं से कहता था कि पहले जन्म में मैं कृष्ण था और तुम सब गोपी थीं। यह कहकर उनके साथ वह मनमानी करता था। इन्हीं पुराणों की ऐसी बातों का उदाहरण गुरमीत राम रहीम ने देकर अपने चारों ओर शिष्याएँ एकत्र कर लीं और उनसे रास रचाता था तथा उसने जो कन्याएँ साध्वी बनी थीं अथवा बनायी गयीं, उनके साथ बलात्कार किया और उसका नाम ही बलात्कारी बाबा रख दिया गया। ऐसे अनेक बाबा हैं, जिन्होंने पुराणों के रास्ते पर चलकर जनता को भ्रमित कर अपने कुकर्मों को कर अपनी इच्छा पूर्ति की है। भीमानन्द, नित्यानन्द, परमानन्द, रामपालदास, गुरमीत राम रहीम तथा एक और नाम प्रकाश में आया था राधे माँ का जो कि पुराणों पर ही रखा गया। राधा जो पुराणों में श्रीकृष्ण के साथ रहती थी। जबकि सत्य यह है कि राधा नाम की कोई स्त्री ही नहीं थी। केवल एक थी जब कृष्ण शिशु अवस्था में थे इनकी मामी थी राधा। राधा का नाम कृष्ण के साथ व्यर्थ में ही जोड़ा गया है। हमारे महापुरुषों का चरित्र-हनन करने में कोई कमी नहीं छोड़ी गई। बाल्यावस्था से अन्त तक श्रीकृष्ण के जीवन में कहीं भी कोई भी कैसी भी दुश्चरित्रता अथवा अवैदिक कार्य नहीं मिलता वह वेदों के विद्वान् थे, योगी थे, ब्रह्मचारी थे, गीता का उपदेश उनकी पवित्र वाणी है। महाभारत में शान्ति के दूत हैं। अर्जुन को गीता का सार सुनाने वाले देवता स्वरूप तेज वाले सुदर्शन-चक्रधारी हैं। भला हो भारतीय जनता का जो महापुरुषों पर कीचड़ उछालने वालों की पूजा करने लगती है। भागवत सुनाने वालों की जयघोष करने लगती है और पुराणों से बने आज के तथाकथित झूठे भगवानों को स्वीकार कर लेती है और थोड़े-बहुत नहीं, लाखों-करोड़ों में भक्त शिष्याएँ बन जाती हैं। अपना तन-मन-धन सब इन झूठे गुरुओं को अर्पित कर देते हैं। जब तक इन गुरुओं की पोल खुलती है, तब तक सब कुछ लुट चुका होता है।

हम आस्तिक हैं या नास्तिक : एक चिंतन

❑ गंगाशरण आर्य 'साहित्य सुमन'

गतांक से आगे....

आपने पोटाशियम साईनाईट के विषय में तो सुन ही रखा होगा कि कितना भयंकर विष होता है कि अगर सुई की नोंक के समान भी जिह्वा पर रख दिया जाए तो तुरन्त मृत्यु हो जाती है। जब आपको इस बात की जानकारी है कि यह इतना भयंकर विष है तो यदि आपके सामने लाकर पोटाशियम साईनाईट लाकर रख दिया जाए और आपको उसे छूने के लिए कहा जाए तो क्या आप उसे छूने की गलती करेंगे? कदापि नहीं करेंगे, क्योंकि आपने इस सत्य को जानने के बाद अपने आचरण में ग्रहण कर लिया है कि इसे छूने पर मृत्यु हो जाएगी इसलिए किसी भी कीमत पर कोई भी उसे छूना नहीं चाहेगा और सतर्क रहेगा, सावधानी बरतेगा कि कहीं गलती से भी उस पर हाथ न लग जाए।

ठीक ऐसे ही यदि हमारा ईश्वर के प्रति ज्ञान यथार्थ है कि वही हमारे कर्मों के फल का देने वाला है, सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी प्रभु हमें हर पल, हर क्षण देख रहा है वह मेरा प्रभु पक्षपात रहित अर्थात् न्यायकारी है। किसी को भी सुई की नोंक से न कम और न ज्यादा फल देता है तो हम कभी भी चोरी नहीं करेंगे, कभी असत्य आचरण नहीं करेंगे, कभी छल-कपट नहीं करेंगे, कभी किसी से झूठ नहीं बोलेंगे, किसी को धोखा नहीं देंगे, क्योंकि ईश्वर की सत्ता को मानने वाला व्यक्ति सतर्क रहता है। ईश्वर के प्रति यथार्थ ज्ञान रखने वाला व्यक्ति सावधान रहता है। झूठ बोलता ही नहीं, छल-कपट करता ही नहीं, क्योंकि उसे पूर्ण विश्वास है कि कालान्तर में उसे उसके अच्छे व बुरे सब कर्मों का फल ईश्वर देगा ही क्योंकि वह सदैव हमें देख रहा है, सुन रहा है। इस प्रकार के मन में आने वाले भाव उसकी आस्तिकता के परिचायक हैं।

अन्त में बस इतना ही कहूँगा कि यदि आपको यह पता है कि बिजली के नंगे तार को छूने पर करंट लगता है और मृत्यु हो जाती है तो क्या आप कभी भी नंगे पड़े बिली के तार को हाथ लगायेंगे? एक्सप्रेस ट्रेन के आने के समय कितने लोग हैं जिनको जबरन उस पटरी पर लिटाया जाए तो विरोध नहीं करेंगे? कितने ऐसे लोग हैं जिनको तैरना नहीं आता और बिना किसी कोच की सहायता के पानी में उतरना चाहेंगे? क्या अनाज आदि में रखने वाली दवा सल्फास आपको खाने के लिए दिया जाए तो आप खायेंगे? कदापि नहीं। क्योंकि इनके विषय में आपकी जानकारी या ज्ञान सत्य है कि ऐसा करने पर मृत्यु संभव है। आज अधिकांश व्यक्तियों का ईश्वर पर विश्वास है ही नहीं। इसलिए वे भिन्न-भिन्न स्थानों पर जाकर लुटते-पिटते रहते हैं। ठीक-ठीक जानकारी ईश्वर के विषय में न रहने से स्वाभाविक रूप से अपने हृदय में बसी ईश्वरभक्ति को कभी किसी गुरु में टेक देते हैं, कभी काल्पनिक देवी-देवताओं में, जिनकी मूर्ति को अपने घर में भी रखते हैं। इस प्रकार अंधविश्वास, अंधश्रद्धा और अंधभक्ति आदि के शिकार होकर ईश्वरपूजा के नाटक में फंसकर अपने साथ-साथ अपने बाल-बच्चों की जीवन शैली को भी सीधी सरल राह पर कभी खड़ा नहीं कर पाते। परिणाम स्वरूप सच्चे ईश्वर की सच्ची उपासना से कोसों दूर रहकर मनुष्य जीवन को पशु जीवन से भी बदतर बना देते हैं।

कुछ बुद्धिमान् व्यक्ति जिन्हें ईश्वर के सच्चे स्वरूप का बोध तो है बुद्धिपूर्वक जानकारी भी रखते हैं, आर्यसमाजी भी बने हैं, वे अन्धश्रद्धा व अंधभक्ति के शिकार भी नहीं हैं, लेकिन मनुष्य होने के नाते अन्य मनुष्यों को जो गलत रास्ते पर हैं, उन्हें सही रास्ता दिखाने में असमर्थ रहते हैं, क्योंकि उनमें बस एक ही कमी है कि वे ईश्वर की सच्ची उपासना को जानते हुए भी अपने जीवन में निरन्तर नित्यकर्म के रूप में इस पद्धति को अपना नहीं पाए फिर उपासना का फल कहाँ मिलने वाला है अन्य मत-मतान्तरों के प्रभाव में आने वाले लोगों की तरह वे केवल बोल देते हैं कि ईश्वर बलों का देने वाला है, सर्वशक्तिमान् है, परन्तु क्या आपने कभी विचार करके देखा है कि जब जीवन पथ पर चलते-चलते कष्ट और बाधाओं का सामना करना पड़ता

है, रुकावटें आती हैं, वियोग होता है, साथी छूट जाता है, विश्वासघात होता है, झूठे आरोप लगाए जाते हैं, तो उस समय व्यक्ति की क्या स्थिति होती है। वह अपना आपा खो बैठता है और प्रत्यारोप लगाता है, दूसरे की हानि कर देता है और बेचैन हो जाता है। उस समय उसे ईश्वर पर विश्वास ही नहीं होता कि ईश्वर बलों का देने वाला है, आंख बंद करके चुपचाप बैठता ही नहीं, प्रार्थना करता ही नहीं कि हे सर्वशक्तिमान् प्रभु! हे बलों के दाता परमेश्वर! मुझे आत्मिक बल दीजिए, मानसिक बल दीजिए, शारीरिक बल दीजिए, बौद्धिक बल दीजिए, हिमालय जितना मुझे धैर्य दीजिए, मुझे सहन करने की शक्ति दीजिए। बताओ कितने लोग हैं जो दैनिक प्रात:-सायं 'ब्रह्मयज्ञ या सन्ध्या' अर्थात् सही वैदिक उपासना पद्धति को नित्यकर्म के रूप में अपना चुके हैं। बस हमने मान लिया है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है पर वैदिक उपासना के अभाव में ईश्वर की तरफ कदम बढ़ा ही नहीं पाते। ईश्वर हमें बल देगा ऐसा विश्वास लेकर व्यक्ति आंख बन्द करके बैठता ही नहीं है। यह इस बात का प्रतीक है, द्योतक है कि बस हमने माना है तो केवल शब्दों में आचरण में नहीं। जिस दिन राम-कृष्ण जैसे महापुरुषों की भांति उन्हें अपना सच्चा आदर्श मानकर हम भी ईश्वर के सच्चे वैदिक स्वरूप को जानकर ईश उपासना को अपने जीवन में अर्थात् दैनिक नित्यकर्मों में स्थायी रूप से स्थान दे देंगे उस दिन हम सब राम-कृष्ण के सच्चे अनुयायी बनकर राम-कृष्ण की भांति ईश्वर भक्त होकर ईश्वर भक्त कहलाने के अधिकारी होंगे। अपने नाम के साथ आर्य कहलवाने में गौरव अनुभव करेंगे। कभी गुलाम नहीं रहेंगे और कभी भी दुष्ट अनार्य और नास्तिक लोगों को शासन का अधिकार नहीं देंगे। स्वयं आस्तिक बनकर शासन करेंगे और पूरी पृथ्वी पर वेद के वचन **'इदं भूमि अददाम: आर्याय'** अर्थात् **'यह भूमि शासन करने के लिए आर्यों (श्रेष्ठों) को दी है'** को सार्थक करेंगे।

अत: वेदानुकूल आचरण करने वाला ही धार्मिक होता है। उसी को आस्तिक कहते हैं। शेष नास्तिकों की श्रेणी में आते हैं

'नास्तिको वेदनिन्दक:'

संपर्क-चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला, ग्राम शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61, मो० 9871644195

स्वास्थ्य-चर्चा....

गुर्दे की पथरी निकालने की अचूक दवा

दोस्तो, मैं डॉ० सत्यपाल सिंह आर्य आयुर्वेदाचार्य आपको गुर्दे में कैसे पथरी बनती है और उसके द्वारा क्या उपद्रव

होते हैं और उसके क्या लक्षण होते हैं, इस बारे में जानकारी देते हैं।

पथरी दो प्रकार की होती है—एक-चूना मिश्रित तथा दूसरी तलछट पथरी ये दोनों पथरी हमारे खाने में जिस प्रकार की अधिकता होती है और हमारे गुर्दे (Kidney) जिस द्रव्य को कम निकाल पाती है तथा जो ऊपर वर्णित द्रव्य हमारे गुर्दे में (Diposite) जम जाता है, तो उस पर धीरे-धीरे परत उसी द्रव्य की चढ़ती जाती है और एक समय आने पर वह द्रव्य एक पथरी का आकार बना लेता है और वह पथरी हमारे गुर्दे को सुचारु रूप से कार्य करने में बाधक सिद्ध होती है जिससे हमारे गुर्दे खराब होने लगते हैं और एक भयंकर कष्टदायक दर्द की अनुभूति होती है जिससे रोगी डॉक्टर व वैद्य के पास जाता है दर्द निवारण दवा लेने के लिए। इस पथरी (Stone) के निवारण के लिए एक अद्भुत नुस्खा आपको लिख रहा हूँ, यह एक अचूक दवा है—मीठा सोडा, हजरल यहूद, नौसादर, गोखरू, यवक्षार, कुलथी यह सब समभाग मात्रा में लेनी हैऔर उनको पीसकर कपड़छान करके एकबोतल शीशे (कांच) की गिलास उसमें भरकर रख लें और सुबह-शाम तीन माशे की मात्रा में भोजन से पहले मक्की के बाल का काढ़ा (100 ग्राम) एक छटांक लेकर उससे लें जिससे अश्मरी (पथरी) छोटे-छोटे कणों में टूटकर बाहर निकल जाएगी। दवा लेने से पहले एक्स-रे करवाकर पथरी का निदान अवश्य करा लें और पेशाब का भी निदान अवश्य करायें। दस-पन्द्रह दिन में आपको अवश्य आराम मिलेगा।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

जिला वेदप्रचार मण्डलों के अधिकारियों के पते (वर्ष 2016-2019)

जिला—हिसार

1. श्री रामकुमार आर्य — प्रधान
शक्तिवर्धक हाईब्रीड सीड्स
तलाकी गेट, हिसार
फोन नं० : 9416030121

2. कर्नल ओमप्रकाश एडवोकेट — मन्त्री
म०नं० 204/3, विश्वकर्मा कालोनी,
बालसमन्द रोड, हिसार
फोन नं० : 9466052503

जिला—सोनीपत

3. श्री रमेश आर्य — प्रधान
द्वारा रमेश बुक डिपो
गोहाना अड्डा, सोनीपत
फोन नं० : 9466845332

4. श्री देवेन्द्र आर्य — मन्त्री
गाँव ताजपुर तिहाड़ खुर्द,
डा० तिहाड़ बागड़ू, जिला सोनीपत
फोन नं० : 9416514194

जिला—जीन्द

5. श्री ईश्वर सिंह आर्य — प्रधान
माता चन्नदेवी आर्य कन्या गुरुकुल
पिल्लूखेड़ा मण्डी, जिला जीन्द
फोन नं० : 9416803650

6. श्री सुनील आर्य — मन्त्री
सुपुत्र श्री मा० धर्मवीर
गाँव पो० जुलानी, जिला जीन्द
फोन नं० : 9991200989

जिला—यमुनानगर

7. श्री कर्मवीर शर्मा — प्रधान
गाँव-पो० खारवन, जिला यमुनानगर
फोन नं० : 9812424465

8. श्री निर्मल विश्वास — मन्त्री
म०नं० 2051, वार्ड नं० 18
रादौरी रोड, रादौर जिला यमुनानगर
फोन नं० : 9050869655

जिला—करनाल

9. श्री सुभाष आर्य — प्रधान
गांव-पो० सालवन, जिला करनाल
फोन नं० : 9996815838

10. श्री दीपक आर्य — मन्त्री
गांव-पो० सालवन, जिला करनाल
फोन नं० : ....

जिला—कुरुक्षेत्र

11. श्री भोपाल सिंह आर्य — प्रधान
गुरुकुल कुरुक्षेत्र, जिला कुरुक्षेत्र
फोन नं० : 8689001516

12. श्री राजीव आर्य — मन्त्री
गुरुकुल कुरुक्षेत्र, जिला कुरुक्षेत्र
फोन नं० : 8689002402

जिला—कैथल

13. श्री नरेन्द्र गुप्ता (सी.ए.) — प्रधान
म०नं० 525/10 पुराने बस स्टैण्ड के सामने
स्टेट बैंक रोड, कैथल
फोन नं० : 9215622598

14. श्री धर्मवीर आर्य — मन्त्री
सिठाना मोहल्ला, कैथल
फोन नं० : 9466292625

जिला—महेन्द्रगढ़

15. श्री इन्द्रलाल आर्य — प्रधान
गोशाला रोड, महेन्द्रगढ़
फोन नं० : 9467452464

16. श्री सन्तलाल आर्य — मन्त्री
गाँव-पो० धनौंदा, जिला महेन्द्रगढ़
फोन नं० : 9996437883

जिला—पानीपत

17. श्री आचार्य अनुपम — प्रधान
आर्यसमाज मन्दिर पुरानी गुड़ मण्डी गेट
समालखा, जिला पानीपत
फोन नं० : 9355824222

18. श्री सत्यवान आर्य — मन्त्री
सुपुत्र श्री नफेसिंह
गाँव-पो० बुआना लाखू, जिला पानीपत
फोन नं० : 9671392689

जिला—सिरसा

19. श्री जगदीश सींवर — प्रधान
गाँव-शेखूपुरिया, डा० पंजवाना,
जिला सिरसा
फोन नं० : 9416253534

20. श्री श्रवण कुमार आर्य — मन्त्री
गाँव करमसाना, जिला सिरसा
फोन नं० : ....

जिला—रेवाड़ी

21. श्री महात्मा यशदेव जी — प्रधान
द्वारा श्री महाशय सुखराम आर्य
काठमण्डी, रेवाड़ी
फोन नं० : 9466035108

22. श्री जसवन्त कुमार आर्य — मन्त्री
आर्य साहित्य केन्द्र, दु०नं० 280
नया बाजार, बावल रोड, रेवाड़ी
फोन नं० : 9812707872

जिला—झज्जर

23. श्री सुरेन्द्र आर्य — प्रधान
गाँव-पो० कानौंदा, जिला झज्जर
फोन नं० : 9991687264

24. श्री राहुल आर्य — मन्त्री
म०नं० 744/13, गली नं० 15,
नजफगढ़ रोड, बैंक कालोनी,
बहादुरगढ़, जिला झज्जर
फोन नं० : 7015123619, 9050034560

जिला—अम्बाला

25. श्री महेशचन्द्र आर्य — प्रधान
म०नं० 1537 कच्चा बाजार,
अम्बाला छावनी
फोन नं० : 9255413812

26. श्री अजय गुप्ता — मन्त्री
म०नं० 458, सैक्टर-8
अम्बाला शहर
फोन नं० : 9315100070

जिला—फरीदाबाद

27. श्री होतीलाल आर्य — प्रधान
गाँव-डीग, जिला फरीदाबाद
फोन नं० : 9871368474

28. श्री रामवीर प्रभाकर — मन्त्री
प्लाट नं० 114-बी., सैक्टर-11,
ब्लॉक-ई, निकट एक्सकोर्ट मुजेसर
मैट्रो स्टेशन, एनआईटी, फरीदाबाद
फोन नं० : 9810515148

जिला—पलवल

29. श्री राधेलाल आर्य — प्रधान
गांव-पो० धतीर, जिला पलवल
फोन नं० : 9050359973

30. श्री दौलतराम गुप्ता — मन्त्री
देवनगर कालोनी, पलवल
फोन नं० : 9350033915

जिला—गुरुग्राम

31. श्री के.सी. सैनी — प्रधान
म०नं० 45/13, सुभाषनगर
ओल्ड रेलवे रोड, गुरुग्राम
फोन नं० : 9911637927

32. श्री वेदभानु आर्य — मन्त्री
म०नं० 7 फ्रेंड्स कालोनी
झाड़सा रोड, गुरुग्राम
फोन नं० : 09811284686

जिला—रोहतक

33. श्री सुभाष सांगवान — प्रधान
म०नं० 630/29, तिलक नगर
रोहतक, फोन नं० : 9466258105

34. श्री रोशनलाल आर्य — मन्त्री
गांव-पो० रिठाल, जिला रोहतक
फोन नं० : 9991168573

समाचार-प्रभाग

वेदप्रचार मण्डल जिला सोनीपत द्वारा वेदप्रचार कार्यक्रम

19.1.2017 आचार्य बलदेव जी की जयन्ती आर्यसमाज सरगथल के साथ, 20.1.17 से 23.1.17 तक स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा प्रचार सोनीपत में, 21.1.17 को वकीलों के बीच कोर्ट में कार्यक्रम, 26.1.17 गांव हुल्लाहेड़ी में यज्ञ का कार्यक्रम, 2.217 गांव महलाना में यज्ञ का कार्यक्रम स्कूल में रखा गया, 23.2.17 को रैड रोज स्कूल देवीलाल कालोनी सोनीपत में यज्ञ एवं प्रवचन, 5.3.17 गांव नाहरी में यज्ञ एवं प्रवचन, 12.3.17 गांव हुल्लाहेड़ी में यज्ञ एवं प्रवचन, 2.4.17 भैंसवाल में यज्ञ एवं प्रवचन, 9.4.17 गांव गढ़ी बाला में यज्ञ एवं प्रवचन, 16.4.17 गांव हुल्लाहेड़ी में यज्ञ एवं प्रवचन, 14 से 31 मई 2017 पंडित उपेन्द्र जी द्वारा प्रचार कार्यक्रम रखा गया। 14 मई गांव बड़वासनी, 15 मई कमासपुर तीनों स्कूल, 16 मई मालवीय नगर, 17 मई पलड़ी, 18 मई मुरथल, शाहपुर, 19 मई गढ़, 20 मई ठरू, 21 मई भदाना, 22 मई हरसाना मालचा, 23 मई जूआ, 24 मई नवाद्या, 25 मई बली, 26 मई आहुलाना, 27 मई करेवड़ी, 28 मई खाण्डा, 29 मई हैप्पी स्कूल, महलाना रोड सोनीपत, 30 मई भैंसवाल, 31 मई हुल्लाहेड़ी, 1 जून से 10 जून गांव जाहरी, हुल्लाहेड़ी, भैंसवाल, हरसाना, मालचा, दुबेटा, राजपुर, गढ़ी बाला, सलीमसर माजरा, 14 से 19 जुलाई अंजलि आर्या द्वारा प्रचार—14 जुलाई अशोक विहार सोनीपत, 15 जुलाई नाहरी, 16 जुलाई भांमर, 17 जुलाई आहुलाना, 18 जुलाई महलाना, राजलू, सलीमसर माजरा, 19 जुलाई नांगल कलां, सैक्टर-15 सोनीपत। अगस्त में—3 अगस्त हुल्लाहेड़ी, 6 अगस्त मॉडल टाउन कालोनी, 7 अगस्त तिहाड़, 8 अगस्त गढ़ी बिन्दरौली, 13 हुल्लाहेड़ी यज्ञ एवं गांव माहरा में सम्मिलित, 15 अगस्त हरसाना मालचा रेखा आर्या द्वारा, 14 अगस्त यूनिक स्कूल सरगथल, स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा—15 अगस्त स्वामी जी द्वारा गन्नौर, 16 अगस्त गुरुकुल रेवली। 27 अगस्त से अंजलि आर्या द्वारा प्रचार कार्यक्रम—27 अगस्त सैक्टर-23, सोनीपत, 28 अगस्त सरगथल, 29 अगस्त कासंड़ी, दुबेटा, 30 अगस्त खानपुर, न्यात, 31 अगस्त बरोदा, 1 सितम्बर नूरनखेड़ा। सभी कार्यक्रमों में वेदप्रचार मण्डल के विशेष सलाहकार (संरक्षक) माननीय धर्मपाल आर्य, महामंत्री देवेन्द्र आर्य विशेष सहयोगी रहे। वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री रमेश आर्य की सभी कार्यक्रमों में उपस्थिति रही। बीच-बीच में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मा० रामपाल आर्य ने भी अपना आशीर्वाद इन कार्यक्रमों में दिया और हर प्रकार का सहयोग वेदप्रचार के कार्यों में देने का आश्वासन दिया जिसमें वेदप्रचार रथ, उपदेशक एवं पुस्तकों का वितरण आदि उपलब्ध करवाना। यह सभी कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मा० रामपाल आर्य की प्रेरणा, सहयोग एवं वेदप्रचार मण्डल जिला सोनीपत की पूरी टीम की निष्ठा एवं लगन से सम्पन्न हुए और आगे भी इसी तरह होते रहेंगे।

—देवेन्द्र आर्य, मन्त्री, वेदप्रचार मण्डल जिला सोनीपत

निःशुल्क योग व चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र व वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द के योगशिक्षक रोहतास आर्य द्वारा मा० रामपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आचार्य देवव्रत जी महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश, श्री ईश्वरसिंह आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द की प्रेरणा से निम्नलिखित गांवों व स्कूलों में निःशुल्क योग व चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन किया गया।

दिनांक 1.7.17 से 7.7.17 तक सरस्वती मॉडल पब्लिक स्कूल, 8.7.17 से 14.7.17 तक सुप्रीम वण्डरलैण्ड स्कूल, 15 से 21.7.17 तक लिटिल एंजल पब्लिक स्कूल, 22.7.17 से 28.7.17 तक राजकीय उच्च विद्यालय जामनी, 29.7.17 से 31.7.17 तक शिविरों का प्रचार-प्रसार। इस शिविर के प्रथम दिन सभा द्वारा प्रकाशित 'प्राचीन वैदिक सैद्धान्तिक ज्ञान पुस्तक' वितरित की। अन्त तक स्वाध्याय करवाया गया। अन्तिम दिन से पहले इस पुस्तक की लिखित परीक्षा हुई। अन्तिम दिन ही व्यायाम के आसन व प्राणायाम की प्रेक्टिकल प्रतियोगिता हुई। इन दोनों प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को देवयज्ञ पर सभा द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भेंट किया गया। बच्चों व शिक्षक वर्ग ने वैदिक नित्यकर्मों व अपने जन्म दिन व माता-पिता के वर्षगांठ एवं वैदिक पर्वों पर वैदिक रीति से हवन करने का संकल्प लिया।

गाजियाबाद के वकीलों में हुआ वैदिक न्याय व्यवस्था एवं नैतिकता के विषय में उपदेश

14 सितम्बर 2017 को यहाँ पर अधिवक्ताओं के बार एसोसिएशन का चुनाव हुआ जिसमें नई कार्यकारिणी का निर्वाचन संपन्न हुआ। संयोग से आर्यसमाज सिंहानी गाजियाबाद के 57वें वार्षिकोत्सव में आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी का आगमन हुआ था, सो 15 सितम्बर को दोपहर 3 बजे तहसील बार एसोसिएशन के तत्त्वावधान में 'न्याय एवं नैतिकता' विषय में बड़े हाल में व्याख्यान आयोजित किया गया। इसमें पूरी कार्यकारिणी के सभी नव निर्वाचित अधिकारी सम्मिलित हुए। बाद में अधिवक्ताओं की जिज्ञासाओं का समाधान पुरुषार्थी जी ने किया। कार्यक्रम लगभग 2 घंटे तक चला। आर्यसमाज की ओर से सत्यार्थप्रकाश, ब्रहमविज्ञान व कर्मफल विवरण पुस्तक बार के पुस्तकालय को भेंट की गई। गाजियाबाद में प्रथम बार यह प्रयोग किया गया जो सफल रहा। बार के नवनिर्वाचित अध्यक्ष राजकुमार शर्मा जी व सचिव योगेश त्यागी जी ने धन्यवाद किया और कहा कि यह अपने आप में अनूठा प्रोग्राम था। आगे भी ऐसे ही होते रहना चाहिए। कानपुर डीएवी के पूर्व छात्र एक मुस्लिम वकील युवक ने भी सिद्धांतों के प्रतिपादन पर अपनी प्रसन्नता प्रकट की। आयोजित करवाने में श्री राकेश शर्मा जी, बार एसोसियेशन के पूर्व अध्यक्ष घनश्याम सिंह सेंगर, आर्यसमाज के प्रधान जी के पुत्र आर्य अधिवक्ता श्री ऋषिराज त्यागी जी ने विशेष प्रयास किया। आर्यसमाज नूरनगर सिंहानी गाजियाबाद का 57वां वार्षिकोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया जिसमें 15,16,17 सितम्बर का त्रिदिवसीय प्रोग्राम हुआ। भजनोपदेशक श्री अजय संगीत प्रभाकर मेरठ ने हर सभा में अलग-अलग विषयों पर उत्तम भजन सुनाये ।आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी ने वेदमंत्रों की व्याख्या की और यज्ञ उपासना के महत्त्व का प्रतिपादन किया जो अतुलनीय रहा। आर्यसमाज के सदस्यों व अधिकारियों ने इसको सराहा। 15 यज्ञवेदियों पर 31 यजमान दम्पतियों ने अंतिम दिन आहुति दी। श्रीआशु वर्मा नगर निगम गाजियाबाद के महापौर,भाजपा के मंडल अध्यक्ष श्री संजीव त्यागी, वरिष्ठ आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री श्रद्धानन्द शर्मा, श्री सत्यवीर चौधरी, बहन श्रीमती प्रतिभा सिंघल जी ने पूर्णाहुति के दिन अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज की और कुछ महानुभावों ने वक्तव्य भी दिये। अगले जनपदीय आर्य महासम्मेलन की सूचना दी गई।

—वीरसिंह, उपप्रधान व संयोजक, आर्यसमाज,नूरनगर, सिन्हानी, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)201203

जैविक कृषि में गुरुकुल कुरुक्षेत्र को जिला में प्रथम पुरस्कार

कुरुक्षेत्र, 21 सितम्बर 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के जीरो बजट प्राकृतिक कृषि मॉडल को कुरुक्षेत्र जिले में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। गुरुकुल को यह पुरस्कार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 19 से 20 सितम्बर तक चले कृषि मेले में दिया गया। यह जानकारी देते हुए गुरुकुल के कृषि अधिकारी गुरदीप सिंह ने बताया कि हिसार में आयोजित कृषि मेले में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे आचार्य देवव्रत द्वारा **'प्रथम प्रगतिशील किसान'** पुरस्कार भेंट किया गया। उन्होंने बताया कि कृषि मेले में हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों से आए सैकड़ों किसानों ने खेती की विभिन्न तकनीक के बारे में अपने अनुभव और विचार व्यक्त किये।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के जीरो बजट प्राकृतिक कृषि मॉडल से सभी कृषि वैज्ञानिक, अधिकारी तथा किसान बड़े प्रभावित हुए और कई किसानों ने इस मॉडल को अपनाने का संकल्प भी किया। जिला में प्रथम पुरस्कार आने पर गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह, सतपाल सिंह, धर्मसिंह, अनिल कुमार, प्रवीण कुमार, अशोक कुमार, कंवरपाल, दिलबाग सिंह, महक सिंह, अमरनाथ आदि ने कृषि अधिकारी गुरदीप सिंह व उनके सभी कर्मचारियों को बधाई व शुभकामनाएं दी।

भजन

कभी नहीं सोचा तूने, बैठ के अकेले में।
कौन तेरा तू है किसका, दुनिया के मेले में॥
कौन साथ आया तेरे, कौन साथ जाएगा।
लाया था क्या ले जाएगा, डाल करके थैले में॥
क्या किसी से लिया तूने, क्या किसी को दे दिया।
जीवन ही समाप्त किया इसी दे दे ले ले में॥
सुख-दुःख हानि-लाभ, शोक-हर्ष जीत-हार।
यही दो उपलब्धियाँ हैं, जग के झमेले में॥
जीवन का उद्देश्य यदि 'प्रेमी' नहीं जाना तू।
हीरा जन्म लुटा दिया, फूटी कौड़ी धेले में॥

—सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहानामण्डी (सोनीपत)

एक वर्ष तक चलने वाला अभूतपूर्व अग्निहोत्र

सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी) पानीपत के तत्त्वावधान में वर्षपर्यन्त (365 दिन, 12 घण्टे प्रतिदिन) चलने वाला गुजरात के बाद भारतवर्ष में दूसरे स्थान गुरुग्राम (हरयाणा) में 1 अक्तूबर 2017 से 30 सितम्बर 2018 तक किया जाएगा। अभूतपूर्व अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ दिनांक 1 अक्तूबर, 2017 (रविवार), समय प्रात: 11 बजे आर्यसमाज मन्दिर बसई, गुरुग्राम (हरयाणा) में किया जाएगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण प्रदूषण निवारण एवं आत्मकल्याणार्थ यज्ञ करने के लिए जनता को प्रेरित करना।

निर्देशक-**पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी,** एम.कॉम., दर्शनाचार्य, उच्चकोटि के वैदिक विद्वान्, देश में सैकड़ों योग एवं यज्ञ शिविरों के प्रशिक्षक, वैदिक दार्शनिक विद्वानों के निर्माता, वैदिक वाङ्मय सम्बन्धित पुस्तकों के लेखक, प्रकाशक एवं वितरक, कैनेडा, अमेरिका इंग्लैंड, मोरीशस, तनजानिया, हालैण्ड, साउथ अफ्रीका, कीनिया, दुबई आदि देशों में 17 वर्षों से प्रतिवर्ष लगातार वैदिक ज्ञान के प्रचारक।

यज्ञ ब्रह्मा प्रख्यात वैदिक विद्वान्, आध्यात्मिक, पुरोहित मण्डल के शिरोमणि, महर्षि के प्रति समर्पित व्यक्तित्व **श्री भरतलाल शास्त्री जी,** गुरुग्राम तथा अग्न्याधान शुभारम्भ-मुख्य यजमान-**श्री शिवपाल चौधरी,** प्रतिष्ठित समाजसेवी, चंडीगढ़, आयोजक-**महात्मा वेदपाल आर्य,** अध्यक्ष सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी) पानीपत, संयोजक-**आर्य सुरेन्द्रसिंह तोमर** व **दलजीत सिंह** गुरुग्राम होंगे।

संपर्क-9416122289, 9811817474, 9311817474, 9958995536

वार्षिक उत्सव का आयोजन

आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक का वार्षिक उत्सव दिनांक 14-15 अक्तूबर, 2017 को धर्मशाला तिलक नगर, रोहतक में प्रात: 7.30 से 9.30 और सायं 3.00 से 6.00 बजे तक मनाया जायेगा जिसमें वैदिक जगत् की विदुषी आचार्या डॉ० सुकामा जी गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के साथ पधार रही हैं।

—सुभाष सांगवान, आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक

वार्षिक उत्सव का आयोजन

आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी रोहतक के **31वां वार्षिकोत्सव** के उपलक्ष्य में **ऋग्वेद आंशिक यज्ञ-भजन व उपदेश शुक्रवार, दिनांक 13 अक्तूबर से रविवार 15 अक्तूबर 2017** तक मनाया जा रहा है, जिसमें विशिष्ट अतिथि-**मा० रामपाल आर्य** (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा), मुख्यवक्ता-**डॉ. सुरेन्द्र कुमार** (अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द शोधपीठ), मुख्य अतिथि-**श्री सूरजमल रोज** (पार्षद रोहतक नगर निगम) भजनोपदेशक-**श्री कैलाश कर्मठ,** यज्ञ ब्रह्मा-**स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती** (गोरड़ आश्रम सोनीपत) होंगे।

अत: आप सब सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

—कर्णसिंह मोर, प्रधान मो० 7228884949

वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित साधना स्थली

वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक-124001 फोन : 01262-253214

अथर्ववेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

[रविवार, 22 अक्तूबर, से शनिवार, 4 नवम्बर 2017 तक]

सभी गुरुभक्तों एवं यज्ञप्रेमियों को यह जानकर अति हर्ष होगा कि वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्य नगर रोहतक में अथर्ववेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया जा रहा है। इस अवसर पर आप सब सपरिवार एवं मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

—वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री # 9416211809

शोक-समाचार

बहुत दु:ख के साथ सूचित किया जा रहा है कि श्रीमती कमला देवी धर्मपत्नी श्री बलजोर सिंह ग्राम पाथरी जिला पानीपत का आकस्मिक निधान दिनांक 7 सितम्बर 2017 को हो गया। उनकी उम्र 66 वर्ष की थी। वे आर्यसमाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेती थी और उनके अन्दर अतिथि सत्कार की भावना बहुत ही प्रबल थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं व्यथित परिवार को इस विकट दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। **—प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा**

लौटो वेदों की ओर अभियान की झलकियां

सरल आध्यात्मिक शिविर

1 नवम्बर से 5 नवम्बर 2017

शिविराध्यक्ष ➡ **स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक**
(निदेशक, दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, गुजरात/सुन्दरपुर रोहतक)

अन्य विद्वान् ➡
स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक (दर्शन योग महाविद्यालय सुन्दरपुर, रोहतक)
आचार्य देवप्रकाश (आचार्य व्याकरण, निरुक्त व दर्शन)
श्रीमती कमलेश राणा योगाचार्या (योग शिक्षिका)

स्थान - दयानन्द मठ, रोहतक

आयोजक ➡ वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास (पंजी)
रोहतक (हरियाणा)

सम्पर्क सूत्र
09416139382
09466258105
09355674547

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा